

त्रयस्त्र्यापत्र

जन्माष्टमी पांना १ मे

बष्ठीपूजन पा. १० में

भाद्रवद ११ पा. १४ में

भाद्रसुद १ पांना १५ में

भाद्रसुद ५ पा. १५ में

भाद्रसुद ८ पा. १६ में

भाद्रसुद १०, ११, १२ दानरुकादशी पा. १६ में

भाद्रसुद १२ वामनजयन्ती पा. १६ में

प्रास्वनवद १ पा. २१ में

प्रास्वनवद ५ श्रीहरिरामजीको ३० पा. २१ में

प्रास्वनवद १२ पा. २१ में

प्रास्वनवद १३ पा. २१ में

प्रास्वनसुद १ पा. २२ में

प्रास्वनसुद ४ पा. २३ में

प्रास्वनसुद १० पा. २४ में

प्रास्वनसुद १५ शरद पा. २६ में

कार्तिकवद १३ धनतेरस पा. २६

रूपचोदस १४ पा. २६ में

दिवारी पांना ३० में

अन्नकूट पा. ३१ में

भाद्रपद पा. ३४ में

गोपाष्टमी पा. ३५ में

प्रक्षयनवमी पा. ३५ में

प्रवोधनी पा. ३६ में

कार्तिकसुद १४ पा. ४२ में

श्रीगोविंद रामजीको उत्सव पा. ४२ में

श्रीगोकुलनाथजीको महाउत्सव पा. ४४ में

मगस सुद १५ छप्पनभोग पा. ४५ में

पौषवद १ श्रीगुसांईजीको उत्सव पा. ४६ में

भागोका उत्सव पा. ५० में

मकर संक्रान्ति पा. ५१ में

वसंत पंचमी पा. ५३ में

हेरिउंगरो पा. ५६ में

प्रोनाथजीको पाठोत्सव पा. ५७ में

कुंजरकादशी पा. ५८ में

हेली पाना ५८ में

दोलोत्सव पा. ६० में

दुतीया पाट पा. ६३ में

नयोसंवत्सर पा. ६३ में

रामनोमी पा. ६४ में

प्रोमहाप्रभुजीको उत्सव पा. ६६ में

अक्षय तृतीया पा. ६७ में

नृसिंह चतुर्दशी पा. ७० में

जेष्ठसुद १० पा. ७३ में

स्नानयात्रा पा. ७४ में

रथयात्रा पा. ७६ में

कशमलछट पा. ७८ में

बेगनदशमी पा. ८० में

असाढी प्रनम पा. ८० में

आवरावद १ हिजोला पा. ८० में

आवरावद ३० पा. ८२ में

ठकुरानी नोज पा. ८३ में

पवित्रा ११ राकादशी पा. ८४ में

रक्षावधन पा. ८६ में

Mota Mandir

श्रीकृष्णाय नमः।

अथ श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवाविधि लिख्यते ॥

॥ भाद्रपद कृष्ण ८ ॥

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 1
 www.vallabhacharya-agrahar.org
 www.vallabhacharyakrupa.org
 (Pustakaniya Research Portal)

प्रथम श्रीजन्माष्टमीके दिन शंखनाद होय श्री महा प्रभुजी जागे
 कोरी वय नई सुपती बिछे केशरी ओटनी ओट्टे फुल्ल नही समर्पे
 श्रीगुरुजी जागे केशरी ओटनी विना झाबरकी ओट्टे मंगल भोग
 सेवके लड्डुवाको बडे बालभोग मठाई माखन वृण सधाना दू-
 धको कयोरा तामे सोनेकी कयेरी २ दहीकी डवेरीया जमुना-
 जलको झारी १ भरी जाय नौमीक आखे दिन जमुना जलकी
 झारी भरी जाय सेवा होइ तिवारीमे सोहनी मंदिर वरुन होइ
 पंखा चढे झारसू लगमां पाट रहे शय्या मंदिरकी ओर पंचामृ-
 तको साज रहे पाटके आगे सूकी हरदीको चौक पूरे स्नानकी परात
 धरानके स्नानको पीटा धरे पट्टा ऊपर कंकूको अष्टदल माडे ताके
 ऊपर लाल हरिया ईको चौपडता वरुन विछवे भोग सेरे जाव-
 मन सुरव कंकू पीडा २ धरे ओटनी संभारके दरसन खोले मंगल
 आरती शरीकी होइ होइ भीतरिया चौरसा कोटे राखे सुंगार बडे
 होय पट्टापै श्रीगुरुजीक पधराके टेरा खोले दरसन खोले दंड
 न करे झालर घंघ शंखनाद करे श्रीगुरुजीक तिलक करे
 क्षत कोटे चरणारविंदमे तुलसी समर्पे पंचामृत शंखमे तुल-
 सी समर्पे आचमनके भावसू जेवने कानके हात लगायके गंगा विष्णु
 हरी कहके प्राणापाम करे हातमे जेठ अक्षत लेके संकल्प कर-
 ने ॐ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महा पुरुषस्य विष्णोराज्या प्रक-
 र्तिमान स्याथ ब्रम्हणे द्वितीयपारर्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत
 मन्वन्तरे कलियुगे प्रथमचरणे क्षत्रु द्वीपे भरतवर्षे भरत खण्डे
 अस्मिन्वर्तमान व्यावहारिक यथा नाम्नि संवत्सरे दक्षिणावने वर्षी-
 कृतौ भाद्रपद मासे कृष्णपक्षे अष्टम्या शुभवासरे शुभनक्षत्रे शुभ
 शुभकरणे एवं गुण विशेषण विशिष्टया शुभतिथौ भगवतः
 स्वोत्तमस्य प्रादुर्भावोत्सवं कर्तुं तदङ्गत्वेन पंचामृत स्नानम

कारयिष्ये १ प्रथम दूधसुं पुनः दहीसुं घृतसुं कुरासुं मधुसुं
 तापीछें ४ शंख दूधसुं तापीछें २ शंख शीतल जलसुं ता पीछें एक
 लोय स्नानके जलसुं स्नान करा वेंटेरा खेनें ता पाछें गादी पै पधराय
 के अंगवस्त्र करे ता पीछें दूसरी परातनें अभ्यङ्ग होय प्रथम कुठल
 सुं पुनः आंवलासुं ता पीछें एक लोय जलसुं स्नान करावे ता पीछें
 उवट नासुं ता पीछें बंदनसुं ता पीछें ४ लोय स्नानके जलसुं स्नान
 करावे ता पीछें एक लोय श्रीजमुना जलसुं स्नान होइ ता पीछें
 १ लोय गुलाबजलसुं स्नान कराय अंगवस्त्र होय स्वच्छ सुंदर
 अवर समर्पि केशरी भांत कार वागा पहरावे प्राचीन कलमदान
 क्षुद्र घंटिका सोनेकी घंटिका जे हरि नूपुर जोडी पहंची कंबभरण
 लड मोतीकी कुलह केशरी तिलक अलकावही लाल कुलहको पेच
 पंजाको गोपीको फूल हरयो तापर लाल फूल लाल जोडी तिहरी धरें
 सावकाश होइ ता हीरा माणिक पंजाकी वीका सीस फूलके ठिकाने
 अर्धचंद्र हीराको हरी त्रिवल लाल त्रिवल गठी लड मोतीकी क-
 लंगी नुरी कमल पत्र केशर कस्तूरीको करे फोदना कडे धरेहत
 सांकला लाल मुद्रिका हीराकी होइ फूल हीराके जेवने श्रीहस्त-
 में धरे श्रीकंठमें हांस हीराको ता ऊपर कौस्तुभके ठिकाने
 छोटे कठला धरे कठला में बीचमें हरी १ मणी आस पास लाल
 २ मणी आस पास चार चार मोती कठला सू नीचे लाल त्रिवल
 ताके नीचे हीराको ताइत ताके नीचे चौकी लाल ताके नीचे पदक
 लाल ता पीछें फोदनाके नीचे मैणकी गोली २ धरे कुंडल मकर-
 कृति के सारि लाल जोडी की माला हरी मणीके फोदनाकी माला
 मोतिनकी बीच में ताइत फासाकी श्री गोवर्धनजी सावकारी २
 श्री गुसाईजीकी खेणी दासजीकी ३ माधोदासजीकी ४ हीराके ताइ-
 तकी ५ हरे ताइतकी ६ जालिम सिंहजी कारी एक एक हारि माणिक
 एक एक मोतीकी ता पाछें विना फांसाकी २ माला हीराके ताइत
 ३ करीछे। २ श्रीगुशाईजीनें दासमशाई

धरें ता पाछें श्रीगुसाईजीकी माला गादी पै स्थमन्तर मणीकी ता
 पाछें हीराकी दुगदुगीकी श्रीगुसाईजीकी ता पाछें हार छोले श्रीगुसां-
 ईजीको हीराको ता पाछे १ माला ता पीछें हार हीराको ता पाछें १ माला
 ता पाछे हीराको हार ता पीछे १ माला ता पीछे हार हीराको ता पाछे
 १ माला ता पीछे श्रीगुसाईजीको चंनको हार ता पीछे श्रीगुसाईजीको
 हार माणिकको ता पीछे १ माला प्रदीन चोरीकी देहावारी ता पीछे
 सावकाश होइ तो १ माला और धरें कलीको वरु भी जुहीको चंद्र-
 हार सोनेको धरें इक हरो शृंगार होइ चुके ता पीछे कमसुं गादी
 ऊपर लीलवाकी माला हरी माला श्वेत माला लाल माला चंपकलीको
 हार हरे कठला लाल कठला कखूरीकी माला गादीकी हमेळ
 धरें गुंजा धरें फोंदनाकी हमेळ २ धरें पांच चंद्रिकाको सादा
 जोड धरें भातिवार रुप हरी झालरकी ओढनी ओढें हीराकी
 गिणु धरें नील कमल २ सोनेके धरें एक चूसनी सोनेकी २ चूसनी
 सोतीकी अंजन आजें श्रीकंठमें हंस ली सोनेकी कुंडलसुं लग-
 मा धरें चोली धरें शृंगार भोगमें सेवके लडुवा कयेरी मखनकी
 बुराकी सधानाकी दहीको कयेरा चमचा टकना उगवें दिखवें नये
 धरना

बाकुरजीको शृंगार होतेमें डोल ति वारी में छोटे बाकुरजीकूं
 शाहि ग्रामजीकूं पंचा मृतस्नान करावें तिलक करके पंचामृतस्ना-
 न पीछे अभ्यंगस्नान अंग वरुण शृंगार होई कमल पत्र होय
 श्रीमहा प्रभुजीकूं अभ्यंग करावें फुलेल चोवा अतर तीनो मिलाय-
 के समपै आभरण गुंजा पहरावें केशरी ओढनी भाति वार उद्ये
 निज मंदिरमें हरीकी चौक पूरें देहरी मांडें ता पीछे पिछाई
 सिंहासन खंड खंडके खिलेना मांडे काम और पडगी पै काचके
 खिलेना की तावकी जेवनी और पडगी पै तिलककी धार सामग्रीकी
 उत्सवकी सामग्री बाल भोगको जग दोइ २ धरें जाय पंजीरी नहीं नि-
 यको शृंगार भोग भोग मंदिरमें धरें
 श्रीबाकुरजीकूं सिंहासन पै पधारवें श्रीबालकृष्णजीको सिंहासन
 धरनी

श्रीमहाप्रभुजीकें पधारवें निज मंदिरमें माला १ कमलकी १ फूलनकी यह
 रावें दरसन खुलें वही आरसी दिखावें झावर घंघ शंखनाद होइ
 तिरुक् होइ श्रीगुरुजीके अक्षत जेवनी ओर तव कडीमें बीडा ४ धरें
 जेवनी और दूसरी तव कडीमें २ नारियलमें कंककी २ लकीर करके
 रूपैया २ धरें श्रीबालकृष्णजीकें श्रीमदनमोहनजीकें श्रीशाबिग्राम-
 जीकें तिरुक् अक्षत होय मुठिया वारके चुनके देवलकी आरती
 करे रूपैया २ नाछावर करे बहुवेटी भेट करे पेडा होइ किवाड
 फेरें गोपीबहुभ भोग आवे आरवो पाटिया २ छोके शाक पाटये
 अनसखडी सामग्रीकी धार तिरुक्के नित्य की धारी सुंगारभोगकी
 गाढे दूधको उवरा मैदाकी पूरी खरखरी कयेरी लोनकी नीबूकी और
 १ कयेरीमें तिरुगुड दूध मिलायके धरें घृतकी वरनी मुरव्याकी क-
 येरी करोदाको बिलसाख मीठे शाक पेयको छोके शाक ४ भुजे
 ना २ वा ४ गोपीबहुभमें तथा राजभोगमें रायता नही आरोगे
 जन्माष्टमीकें तथा वैकैतके जन्म दिनकें रायता नही आरोगे
 जमुना जलकी झारी २ भरे ग्वालको नियम नही होय वान होय
 गोपीबहुभके बीडा २ उवरा सारे पहना झुलें बीडा २ कयेरी
 मिश्रीकी डेलीकी वदामकी मारन मिश्रीकी धरनी फीकी सेव सर
 झराकी वरफीकी उवरीया गोलीकी कयेरी १ जमुना जलको सागे
 खिलेनाकी तवकडी पहना झुल चुके राजभोग आरोगे धार
 ने आगेकी उवरीया मीठे शाककी घृतके कयेरा धारमें जलके
 प्याला छडी यर दारकी उवरीया मूंग लीन कूडा रोटी लीयी की
 शाक २ पापड तिरुवडी देवरी कचरियानकी धारी मिरच वडी शा
 कभाजी भुजे ना कंटेके ^{सखडीमें} अनसखडीमें पहनाको भोग
 राजभोगमें आइ जाय दही शिरवरन कयेरी सधानाकी नीबूकी
 लोनकी गोपालबहुभमें फनीकी धार उत्सवको सधाना दूधके
 हांडी मलडा चालनीकी कयेरी मिरचकी वूराकी फदली फलादि
 खीर बोखाकी नित्यने दूनी मग बडाकी छछकी चपटीया चुनकी
 पूरी करोदाको बिलसाख पडा पेया कयेरी मारनकी वूराकी

बाकी श्री बालकृष्णजीकं सरवडीकी थार न्यारी आवें शकरकंद
वेगन नहीं श्री जमुनाजलकी झारी श्री गुरजीकी २ श्री नाथजीकी
१ श्री बालकृष्णजीकी १ श्री महा प्रभुजीकी १ तुलसी शंखोदक धूप दीप
पेड़ा होइ किवा उलगे

गोपी वंदन भ भोग सों तिलककी माला कडी होइ सो माला तिलकके
बीज २ सिंहासन पे जेवनी ओर धरें बीजा माला भेटके नारियल
रूपैया मोतीके दिना सध्या आरती पीछे उठे समय भये भोग सों
आचमन बीजा मुखवल निज मंदिरमे सिंहासन पे विराजे जडाऊ
वंयमें बीजा जमुनाजलकी झारी १ झारी श्री बालकृष्णजीकी श्री महा
प्रभुजीकी जडाऊ कुजा आव खेरा सी सी फूलकी माला पहरे श्री ग-
कुरजी श्री बालकृष्णजी श्री शालिग्रामजी श्री महा प्रभुजीके गंद चौ
गान सोनेके केस्र जडाऊ चौपड कला वचुके कामको पट खंडपै
सोने रूपेके खिलेना तव कडी पडगी पे काचकी तव कडी पाटचो-
की सिंहासनकं लगायके त्रिधी २ धरें गंद चौगान धरें वडी आ-
रसी दिखवें राज भोग आरती मोतीकी थारी सोनेके दीपलाकी
होइ आरसी दिखवें माला बडी करे श्री हस्तमें कडी होइ सो
बडी करे माला छेये जेवनी ओर तव कडी में धरें बीजा माला
वाम ओर धरें पेड़ा नित्य देऊ ओर लगे जन्माष्टमीके दिना
शय्याकी ओर पेड़ा लगे पलना मजे तासूं पलना नहीं धरें तासूं
पलनाकी ओर पेड़ा नहीं लगे शय्या मंदिरमे माला बीजा झारी पं-
खाकी त्रिघोडी जमुनाजलकी वंयमें सेवके लडुवा कयोरो सारवकी
वराकी सधानाकी शय्यानके पेड़ा पैया लगे सांकड करवा कर कडी
नहीं मूठामें केशरी वगा सुधन तनियां पटका पाग धरें टोकरीमे
साडीके सरी सादा चुनके धरें लाल अतलस छपाकी चोली लाल
की मखांपको लहेगा मूठ के टकना वट वंहीके

अनक सर होय ताल मंगल कर साइकं शंखनाद पाव कडी दिनते
होय झारी जमुनाजलकी भरे श्री गुरजीकी १ श्री बालकृष्णजीकी १
श्री महा प्रभुजीकी १ माला बीजा अनो सरके उठे तिलकके रहे आवें

उत्थापन भोग आवें खोवा मलाई मिश्री पना मिश्री की डेही की बदामकी
 क्येरी १ क्येरीमें बदाम मिश्री की कनी मिलमा लोन मिरच बुरा बदलीफ.
 लारिक भीजी चनाकी दार अज मान सुधां पीके सेव इस शरा की च-
 हनी सबत होकी तर मेवा

Shri Taj Mahal Mandir - Pracheen Kram 1

उत्थापन भोग सरें कुंजा आवर वेणु जमना जलके भरें आचमन
 मुखवरुन वीडा वंयमें ४ माला श्री गुरुजी कं पहारवे श्री हस्तमें
 कली धरें पाट चौकी लगावे गंद चौगान त्रिथी धरें दर्शन खुले
 वधाई २ शरी भर संध्या भोग धरें सेवके लडुवा सधानाकी
 क्येरी कली बडी करे संध्या भोग सरें आचमन मुखवरुन
 वीडा २ धरें संध्या आरती होय वेणु सिंहासन पे रह्यो आवे शृं-
 गार बडे नहीं होय ग्वाल आरोगे उवरा सरें आचमन मुखवरुन
 वीडा शयन भोग आरोगे भात छडि यल दार रता लूको शाकवडाकी
 छछ जलकी क्येरी पापड ४ सधाना लोनकी क्येरी पूरी छौंको
 शाक समय होय दूसरे आवें भोगसरें आचमन मुखवरुन वीडा
 माला सब स्वरुप पहरे खंड पाट चौकी लगे त्रिथी धरें गंद चौगान
 चौपड मडे शयन आती होय वधाई गावे जागरणके दरसन खुले
 शयन भोगके समयमें पलना शृंगारे साजे नई सुपेती दूहरी चदर
 डोरियाकी वाल शत गिरदा सुज नी नहीं पलनामें तीन सुंडिया धुरके
 पीतांबर ३ विछायके क्येरी साजे गुलाबपाक की सखेलीकी रेवडीकी
 उंडानकी तिन गुनीकी सावनीकी तिलकी रोटीकी पगे बदामकी
 पगे पिस्ताकी पगे इलाइची दानाकी १० मिगई दस दस पैसा भर
 सब आवें मारवनकी मिश्रीकी मिश्रीकी डेहीकी बदामकी दाखकी छ-
 हाराकी मेवा खिचडीकी गिरीकी ८ रस खोराकी गोली १ खोवाकी
 गोली २ केशरी तथा श्वेत मलाईकी क्येरी गुंडिया श्वेत तथा के-
 शरी.

पंजीरी की क्येरीमें गोली पलनामें महलं मेवाकी क्येरी तापीछे
 दूध घरकी क्येरी तापीछे रस खोराकी वंजीरीकी तापीछे मिगई
 की मावें जितनी पलना तें वचे सो महा भोगमें आवें. शरीमें सज

शयनभोग सरें साज सब मछे शय्याके चोरसा उठें झारी बीडा
 वंटा पेअण लगे सिंहासनपै भोगके समयकी जन्म समयकी माला र
 हें झारी २ तामें सिंहासनपै कुंजा आवरवेरा झारी श्रीबालकृष्ण
 जीकी झारी श्री महा प्रभुजीकी झारी झारी २ शय्याकी दुपहरके
 अनोसर कव सब साज मछे

अर्धरात्र के समय होइ पाट चौकी सरकावे त्रिछो उठें भीड की
 तीनीयां सरके पंडा उठे शय्याको साज यथा स्थित रह्या आवे ति
 वारीको टेरा खेचे निज मंदिरमें परात स्नानको पद्य पंचामृतके
 क्योरा चंदनकी क्योरी कंकु अक्षत तुलसी की क्योरी तब कडी
 शंख पडगी पै सोनेकी क्योरी खंडपे पीतांबर २ धर राखें गोरव
 लामें मालाको वेइया अरगजाकी वरनी धर राखें तीन लोय एक
 लोय संकल्पके जलको एक शीतल जलको एक स्नानके जलको
 निज मंदिरको टेरा खेचके नगर खाना कीतीन बेला चाली बंद तिवा
 रीमें बीचकी चौकी पै घंघ मधरायके जन्म प्रकरणके श्लोक

अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः। यर्होवा जनजन्म क्षी
 शांतक्षी ग्रह तारकम् ॥ १ ॥ दिशः प्रसेदु गीगनं निर्मलोडगणे द्यम्।
 मही मङ्गल भूयिष्ठा पुरग्राम व्रजाकरा ॥ २ ॥ नद्यः प्रसन्न ललित
 हृदा जलरुहश्रियः। द्विजालिकुल संनादस्तवका वनराजयः ॥ ३ ॥
 कवो वायुः सुखस्पर्शीः पुण्यगन्धवहः शुचिः। अग्रयश्च द्विजातीनां
 शान्तास्तत्र समिन्धत ॥ ४ ॥ मनां स्यात्प्रसन्नानि साधूनामसुर
 रुहाम्। जायमानेऽजने तस्मिन्नेदु दुन्दुभयो दिवि ॥ ५ ॥ जगुः
 केन्तरगन्धर्वीस्तुष्टुबुः सिद्धचारणः। विद्याधराश्च वनतुरप्स-
 ताभिः समं मुदा ॥ ६ ॥ सुमुचुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदात्वि-
 ताः। मन्दं मन्दं जलधरा जगर्जुरन सागरम् ॥ ७ ॥ निशीथे तम
 भूते जायमाने जनार्दने। देवक्यां देव रूपिण्यां विष्णुः सर्वगु-
 षायः। आविरासीद्यथा ब्रह्म्या दिशीन्दुरिव मुक्कलः ॥ ८ ॥

साठे ८ श्लोक ३ वार पढके ता पाठे घंघनाद कछू कर हरहके
 वेर करे निज मंदिरको टेरा खेले तिवारीको टेरा खेले सिंह
 रिके द्वार खुले नहीं दसवीस आदमी दरीन करे एक कीर्तनीयां

पधारै गावे झालर घंटा शंखनाद होइ स्नानके पडा पै कं-
 कूको अष्टदल मांडके दंडवत करके गोदेके गकुरजीकू पडा पै
 पधरावे झालर घंटा शंखनाद तिलक अक्षत तुलसी चरणारविंद
 तथा शंखपंचामृतमें समर्पके प्राणायाम कर संकल्प करेनो पंच-
 मृत करावने दूधसू दहीसू घृतसू वृषसू शहदसू ता पाछे
 एक शंखशीतलजलसू ता पाछे शंख पडगीत के धर देने श्री-
 बालकृष्णजीकू हातमें लेके चंदनसू स्नान करावने ता पाछे स्न-
 नके जलसू स्नान करावने अंग वस्त्र करके श्रीगकुरजीकी गद्दी-
 के पास जेवनी ओर पधरावे श्रीगकुरजीकू ओढनीके ऊपर पी-
 तांबर उढायके श्रीबालकृष्णजीकू पीतांबर उढावे श्रीगकुर-
 जीकू तिलक अक्षत तथा चरणारविन्दमें तुलसी समर्पे श्री-
 बालकृष्णजीको भी तिलक अक्षत तथा तुलसी समर्पे टोरा खे-
 चे भीड सरकावे श्रीगकुरजीकू माला २ श्रीबालकृष्णजीकू
 माला छोटी श्रीमदनमोहनजीकू माला बडी श्रीमहाप्रभुजीको
 माला पहराय के अंगजासू श्रीगकुरजीकू श्रीबालकृष्णजीकू
 पिछवाई सिंहासनकू किंचित् रिवलावे सिंहासनपै सीतलभो-
 ग आवे क्येरी धरें झारी ४ श्रीगकुरजीकू २ श्रीबालकृष्णजीकू
 १ श्रीमहाप्रभुजीको १ आचमन शीतल भोगके क्येरीमें होइ शी-
 तल भोग सरें मुखवस्त्र होय श्रीगकुरजी श्रीबालकृष्णजीकू
 सिंहासन श्रीमहाप्रभुजी भोग मंदिरमें पधारें महाभोग आवें भात
 की धार छडियल हार तीन कुडा पांचो भात वडीके शाक २ पापड
 तिलवडी देवरी मिरच फूल कचरिया सब तरहकी पाटिया पूरो
 उवरा में आवे वेगन विना शाक भुजेना सब तरहके सरवडी
 अन सरवडीमें कंदके शाक भुजेना जलकी क्येरी १ मूंग रोटी छेपि
 मग कटी नहीं पाटपै जेवनी ओर श्रीगकुरजीके झारी २ श्रीज-
 मुनाजलकी रहें श्रीगकुरजीके पास दूधकी हांडी धरें तामें क्येरी
 धरें पाटपै दूधघरकी सामग्री सब भोग आवे पेडा केरी तथा श्वेत

श्री गुरु जी का नाम

Core Mata Mandir - Pracheen Kirtan
 www.valmiki.org
 Shri Tatiji Maharaj Ki Pustak
 Sansthan
 Gokulnathji Maharaj
 Mata Mandir

गेंद चौगन त्रथे धरे शय्यानकी झारी २ श्रीगुरजीकी झारी १
 सिंहासन पे ताके आगे अरगजाकी वरनी जन्म समयकी धरी होइ सो
 रही आवे एक झारी श्रीबालकृष्णजीकी एक श्री महाप्रभुजीकी म-
 हा भोग सरे की आती मोतीकी धारीकी सनेके दीवलाकी उबरे श-
 य्याके पेड़ा लगे www.allabhacharya-agrahar.org
 समे होय तब अने सर होके पलनाके फूलकी वंदन वार फोरना
 बंधे पलनाके पास वाम ओर कूं चडगी पे १ झारी जमनाजलकी रहे
 सिकोलीमें बीडा २ वरासकी कयेरी छंनसूं टकके धरे एक थार
 में छोट नग सामग्रीके भरके धरे कुरके गुझा मठडी सेवके लडुवा
 वही शकर पारा मेवाये मनोहरके बीजके चिरोजीके लडुवा पं-
 जीकी गोली.

एक थारमें पीके खिलेना दोऊ थार सिकोली रेसमी छंनसूं गं-
 कके धरे त्रिधी धरे खिलेनाकी तबकडी झुंझुना धरे

महा भोग आय चुके छये पूजा होइ पूजाकी विधि छयी पहले
 छिरव राखी होय फूलको पल्लुको मुले तापें पीतांबर लख दर्श-
 ईको का पीरो उठायके वंसी खड्ड मंथान कुंकुम अक्षतकी थारी
 चूनको दीवला मुठिया ४ बीडा १ सिद्ध कर राखें खीचडी चांवर च-
 नाकी दारकी छयीके आगे टेर कर राखिये पडा २ तापर पीरो
 वरुण विछाय राखें तापें श्रीनंदरायजीके भावसूं बैठके पूजन करि
 प्रथम संकल्प करिये. देशकाल हि भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य
 संभावित समस्त निवृत्त्यर्थे सूतिका रक्षार्थे षष्ठिका पूजनमहं
 कारयिष्ये. संकल्प कर षष्ठी पूजा पाछें वेणु खड्ड पूजा घृतकी
 धारा ३ वा २ एवा ती स्त्रीके पास आरती उतराइये बीडा २ आर-
 तीमें धरने भोगमें मठडी २ षष्ठी पूजा करके महाभोग सरवने
 सिंहासनसूं पेड़ा लगाय देनो रात्री बहुत जान पडे तो अनेसर
 करनो घडी १ वा २ गुरजीकूं पलनामें पधरावे.

श्रीगुरजीकूं पलनामें पधरायके छोट गुरजीकूं पास

पलनामें पधरावे ता पीछे श्री यशोदाजी कूं पधरावे श्री यशोदाजी श्री गुरु जी कूं पीतांबर उढावे भेट धरें ता पाछे श्री यशोदाजी गादी पर विराजके श्री गुरु जी कूं पलना झुलावे टीकेत श्री गुरु जी कूं पीतांबर उढाये भेट धरके पलना झुलावे ता पीछे और वल्लभ कुल पीतांबर उढावे भेट धरे श्री नंदराय जी कूं पधरावे गोपी ग्वाल पधरावे.

पलना (गांधी आरती उत्तरे दर्शन होय पृथक् नौछावर) रूपेया करे श्री नंदराय जी बैठकमें पधरावे श्री यशोदाजी कूं भीतर पधरावे ग्वाल गोपी पधारे मंदिर धुवे उई लेन होइ नित्यकी अपरस होय श्री गुरु जी कूं सिंहासनपै पधरावे मंगल भोग खिचडी के नगको धरें झारी १ जमुना जल की भरे श्री महा प्रभु जी कूं कार पधराय के शृंगार बडे करके पलंगडी विधायक फुलेल समपके आभरण गुंजा पहराय के श्री गुरु जी के पास पधरावे शय्या मंदिरमें सोहनी मंदिर वस्त्र न होय शय्यानपै हाथ फेरके कसना बांधके वाले शत विधायके केसरी चदर उढावे मंगल भोग सरावे आचमन मुख वस्त्र वीड २ धरें मंगल आरती होइ टेरा खेवे जन्मकी माला वडी करके तिलकके माला बीडानके पास तव कडीमें धरें शृंगारकी माला पहराय के आरसी दिखावे दरसन होय गोपी वल्लभमें आरवो पाटिया छवे शाक २ घृत वृत्त थार साने अनसखडीमें पूरी मैशकी खरखरी खेनकी क्येरी आर पाचरीकी नीकरी घृतकी वरनी मुरवाकी क्येरी करोदाको बिलसाख पेगको मीये शाक उत्सवको सधाना सधाना चार मीरचको पीपरको दाखको छहाराको महा भोगमें शाक रायता भुजेना जितने आवे होय तितने सब आवे शृंगार भोगकी थारी सब क्येरी दहीके क्येरा सुद्धा ग्वाल नही होय गोपी वल्लभके समे होइ तव शृंगार भोगकी थारी सरायके नीचे धरे देइ थारीके ठिकाने डबरा आवे क्येरी धरें गोपी वल्लभके समेमें पलना विछावे सुपेती दोहरी दोहरी चादर सुजनी डोरियाकी चादर वाले शत गिरवा सुंडिया पीतां-

कर बीडा २ कयेरी जन्माष्टमी वत् एक झारी करपीको कयेरा गोली
 की कयेरी डवरा धरकें राज भोगकी सब झारी भरें पहना भोग धरें
 गोपी वल्लभ भोग सरें डवरा सरें आचमन मुख वस्त्र बीडा दोड श्रीग
 कुरजी श्री बालकृष्णजी श्री महा प्रभुजी पहना मंदिरमें पधारें गोपी
 वल्लभके बीडा पहनाके बीडानके पास धर देइ श्रीग कुरजी पहना
 झुल चुके राज भोग आवें भादो वदी ९ सु दिन ८ ताई पहनाके गो-
 ली ४ सामग्रीकी पंजी सिके पीके को वंग खिलेना तथा छोटे ध-
 पडी आरोगे पटाकी कयेरीमें जन्माष्टमी वत् सरखडीमें भोजन छ-
 डियल दार मूंग तीन कु डारतालुको का अर्वाको १ पतरो शाक एक
 छोक्या शाक रोये लीये नुरतकी अरोगे पांचो भोजन कचडिया पाण्ड
 तिलवडी टेवरी मिरच फूल छोकें शाक महा भोगमें सुं राखने
 सो राज भोगमें आवें आगेकी डवरीया मोठे शाककी जलको व्या-
 ल।

अन सरखडीमें गोपाल वल्लभमें खिचडीके नग गुंझा मठडी लडवा
 सेवके उत्सवको सधाना दही शिखरन खेन नीवु आदा पाचरी
 पहनाको भोग खीर मग वडाकी छछकी चपटिया खीर नित्यते
 दूनी होय हांडी मठडा दूधके निलको सधाना ४ तरहेके शाक भु-
 जेना महा भोगमें आये हांडी तिनने सब राज भोगमें आवें चुनकी
 पूरी चालनी कदलें फलदिक नहीं आवें आवें तो आवें अंबरस
 गोपी वल्लभमें राज भोगमें आरोगे।

समे होय राज भोग सरें आचमन मुख वस्त्र बीडी आरोगे फूलकी
 माला स्वरूप पहरे वंग कुंजा आवरवोरा जडाऊ गेद चौगाने सोने
 के चौपड जडाऊ सब साज जन्माष्टमीको झारी सब भरी जाय सिंहा-
 सनकी तथा शय्या नकी पाट चौकी आगे ले त्रिघी धरें आरसी बडी
 देखें राज भोग आरती धारीकी होइ आरसी दिखावे माला सब स्व-
 रूपनकी बडी करे शय्यानके चौरसा उगवे माला बीडा झारी वंग त्रि-
 घी पंखाकी त्रिघोडी पेडा दोरु ओरके लगावे पहना धरें अने-

सर होंय सांझ कूं अबेरे शंखनाद होंय संध्या उत्थापन भोग मेले आवें तासूं श्रीगुरुजीकी झारी २ भरी जांय एक श्री बालकृष्णजीकी एक श्री महाप्रभुजीकी उत्थापन भोग जन्माष्टमीवत् मिश्रीको पना भीजा दार नहीं आरोगे. नौमीसूं संध्या भोगमे खिचलेके नग सघानाकी वृथेशी।

समें होय भोग सरें आचमन मुख वस्त्र वीडा ६ धरे जिनमें २ संध्या भोगके ४ उत्थापनके श्रीगुरुजीकूं माला पहारवे पाठ चौकी आगे सरकावे गेदचौगान त्रिधी धरे वधाई गावे दरसन खुले आधे दरसन होई ता मीछे गेदचौगान त्रिधी उठे पाठ सरके खंडसूं चौकी लगावे संध्या आरती होय चौकी उठे वेचकी होइ माला केडा झारी पाठपै धरे श्रीगुरुजीकूं पाठपै पधारेन पीतांबर ओठनी बडी करे शृंगार बडे होइ श्रीकंठमें चौकी रहै कुलह रहै कुलहपै हयो ताइत रहै वागा बडे होय विना झालरकी ओठनी भांति वार केसरी ओठे श्रीमदनमोहनजी श्री बालकृष्णजी श्री महाप्रभुजीके शृंगार बडे होय गाल होंय उवरा सरें शयन भोग जन्माष्टमीवत् आवें सिंहासन पैसूं जन्मकी माला तिलककी माला उमडके टीकेतकूं पहारवनी वीडा देने।

शयन भोग सरें आचमन मुख वस्त्र वीडा ६ धरे माला सब स्वस्वपनकूं पहारवे शयन आती धारीकी होय माला बडी होय सबस्वस्वपनकूं पौठवे वीडा माला झारी वंय त्रिधी पंखा श्री बालकृष्णजीकी झारी माला श्रीमहाप्रभुजीकी झारी माला।

ताला मंगल होय शयनसमें जन्माष्टमीकूं मालाके जोड नहीं धरे शृंगार बडे न होय तासूं दसमीके दिना आखे दिनामें घौर मठडीको नेग आरोगे शृंगार वस्त्र वागा जन्माष्टमीके पहरे सावकाश होय तो जोडी दुहरी धरे श्रीकंठमें जुगनु वधनखा पदक धरे कुलह पै पान हीराको धरे श्रीकंठमें हंसली सोनेकी धरे बंगला धरे वान

धरें फोंदना पै गादी पै हमेल कठला जैसी नहीं धरें एकादहार
 माला २ नहीं धरें इच्छ होय तो फोंदना पै ताइतकी हमेल धरें हरी
 १ जाल २ हिराकी ३ नियम नहीं मंगल भोग १ झारी २ बीज गोपी वल्लभ
 भमें २ झारी गोपी वल्लभ भोग सरें तक १ झारी ग्वाल ग्वाल होत
 पास रहे, एक झारी पलनाके पास रहे गोपी वल्लभ भोग भात छडी
 यरदार उवकी की कडी मिरचकी शाक १ छेके शाक २ पापड
 अनसखडीमें मैदाकी परी २ खरखरी कयेरी नीवु लोन आदा पा-
 चरी मुरवाकी घृतकी वरनी रायता १ छेके शाक ४ भुजेना १ वा
 २ समें भये भोग सरें बीज २ आरोगे ग्वाल होय उवर आवे भो-
 गसरें पलना झुलें पलनामें बीज २ मिर्चके टुक - मेवाकी क-
 येरी १ फिरती मोखन मिश्रीकी वरनी पीके को घंघ फिरतो दूध
 घरकी कयेरी गोलीकी कोऊ दिन दूध पूरी छेके कोऊ दिन व-
 रकीके टुक एक झारी उवरियानमें पैड वरपी पलना झुल
 चुके राजभोग आरोगे

राज भोगमें आगेकी उवरीया मिरचके शाक की जलको ब्याल
 छडीयल हार मुग कडी उवकीकी पापड तिलवडे टवरी छेके शाक
 रोटी लीची अनसखडीमें दही शिरवरनु लोन नीवु आदा पाचरी
 दूधको कयेरा खीर मठ चुनकी पूरी छेके शाक भुजेना रायता १
 पलनाको भोग राजभोगमें आय जाय वंदके शाक भुजेना उत्स-
 वको दूसरे दिन तासुं एका दशी कुं कंठके शाक भुजेना फलार होय
 तासुं कंदके शाक भुजेना दसहरासुं रामनोमीकी दसमी तांडे
 आरोगे श्रीनवनीव त्रियाजी कार्तिक वद १० सुं रामनोमीकी
 एकादसी तांडे आरोगे भादों वद १० सुं गोपाल वल्लभमें वृंदीके
 लडुवा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ भादो वद ११ ॥

कुं पिछवाई बाल लीलाकी भावस तांडे
 एकादशी कुं शृंगार आप करे वरुज जन्माष्टमीके वाक नहें धरें

जोड़ी उत्सवकी मध्य के फोदना फोदना पर प्राचीन हमेक १ धरे
 कर्णफूल ४ श्रीमस्तक पर झालरकी दोपी अलकावली ताइत लाल
 ठाढी लड गादी पर हार २ लाल चंद्रहार गुंजा गोपीवल्लभमें रोये
 घृतको प्याल दोय धेंके शाक दोइ धुजेन मंग की कडीको शाक
 मिरचको शाक पकोडीकी कवेरीमें पकोडी आरोगे मनोरथसं मारवन
 १ वराकी १ कवेरी आरोगे राज भोगमें पकोडीकी कडी पकोडीको मि
 रचको शाक मुंगकी दार उवरी या में पकोडी आरोगे राज भोगमें फ
 लार आरोगे सेधा लोन मिरच वुरा चालनी बदली फलदिक्

भादों वद ११ सुं भादों सुद ७ तांई प्राचीन हमेक कठला जैसी नि
 त्य धरे हें नेमसुं भादों वद ११ सुं भादों सुद ११ तांई पलनामें मारवन
 मिश्रीकी कवेरी मनोरथसुं आरोगे और भादों वद ११ सुं पलनाके
 समें वगीचाकर भौरा फिराके श्रीवामन द्वादशी तांई

भादों वद १२ कुं वृवरकी दार आरोगे एकादशीकुं गादी प्राचीन
 रहै गादी वस्त्र विछे सिंहासनको साज करे वंयको भांति वार चेट
 पलग पोष उठ जाय

भादों सुद १ कुं श्री राधाजीकी बधाई बैठे हरे श्याम वस्त्र नहीं धरे
 शृंगार इच्छा होइ सो कर आजसुं दसमी तांई मरवमलकी पिछ
 वाई वंधें शृंगार अनुसार

भादों सुद ८ ऋषि पंचमी कुं इक हाली पीरी चूड़ोंके वस्त्र हरीजोडी
 गोल पाग लूमकी कलंगी सुनहरी हमेक प्राचीन नूपुर धरे

गोपीवल्लभमें तुअरकी दार पकोडीकी कडी राज भोगमें हांडी म
 लजा गोपालवल्लभमें मनोहरके लडुवा आरोगे

भादों सुद ६ कुं श्री विठ्ठल रायजी कडे श्री दाऊजीके पुत्र तिनको
 उत्सव मंगल भोगसुं सांझके अनोसरके वंय पर्यंत वंदी जलेवी आ
 रोगे पिछकाई हरी मरवमलकी वस्त्र पंचरंगी ल हरीयाके छज्जेदार

पाग हीराकी जोडी मध्यके फोदना हमेक प्राचीन धरे गादी पर हार २
 हीराके चंद्रहार चंद्रिका सादा गुजरी धरे श्रीकंठमें कंठी दुगदुगी
 वही हीराकी कर्णफूल ४ गोपीवल्लभमें आरवे पाटिया मीचे शाक उत्स
 वके सुधाना

पलनामें मिश्री की डेली वराम मिगई मेवा नहीं फीकी सेव झर झराकी राज भोगमें आगेकी डकरीया मीठे शाककी छडिबलदार तीन कुंडा पापड तिल वडी देवरी गो पाल वल्लु भमें जल वीकी थार उत्सवको संधाना हां डी मलडा दूधके खीर नित्यसं दुनी वडाकी छछ

उत्थापन भोगमें वराम मिश्री की डेली मिगई मेवा नहीं फीकी सेव झर झराकी बालनी सव तराहकी

भादों सुद - मीकूं

वराम कसू मल सुनहरा की जोडी पाग छज्जेदार वा गोल लुमकी कलंगी वा चंद्रिका धरे गादी वराम नहीं सिहासनको सुपत साज उतरे मखमलको रहे दूसरे उत्सवको नगार खाना ४ दिन पहले बैठे अष्टमीकूं जागते के सरी ओठनी विना झाकरकी ओठें

भादों सुद - मीकूं श्री राधाजीको उत्सव

मंगल भोगमें बडे बाल भोग बुंदीके लडुवाको आरोगे मंगल भोगसु सांझके अनोसरके वंग तांई शंखनाद होइ श्री महा प्रभुजी जागे पलंग पोष कसना उत्सवके कोरा वंग जन्माष्टमीको फुलेल समपी आभरण गुंजा पहरे केसरी भांति वार ओठनी ओठें श्री गनुरजीके कसना झावा पलंग पोष उत्सवके मंगला आरती थारीकी होइ शृंगार वडो होइके अभ्यंग होइ फुलेल आवला चंदन उवटना नहीं वागा पहरे कुलह धरे वराम भांति वार जोडी सावकास होइ तो दुहरी धरे जोडी आभरण शृंगार सवे जन्माष्टमीको शृंगार दुहरो होइ कटिमें क्षुद्र चंद्रिका क हीं फोंदना पर गादी पर हमेल नहीं चूसनी नहीं कमल पत्र होइ सिहासन पिछ भाई जन्माष्टमीके गादी प्राचीन तकिया जडाऊ चंदवा टेरा दिवाल गीरी मूवाके टकना वंदन वार जरीके खिंचके पंखा जरीके शृंगार होइ चुके माला पहरे आरसी केरेवं काजर टीकीके वंगमे माहा खडी सेंदुर काजर टीकी हींगलू पहरे

गोपी वल्लु भ भोगमें आखो पाटिया मीठे शाक उत्सवको सधाना भोग निज मंदिरमें आवे गोपी वल्लु भ भोग धरके भोग मंदिरमें विराज वेके पाटके नीचे हरदीको चोक पूरे गादी तकिया जडाऊ धरके दूसरे स्वरूपको शृंगार करे हरे की मखाको लहेगा केसरी डोरियाकी

साडी लाल अतलसके छापाकी चोली मूगके आभरण क्षुद्र घंटिका च-
 रणारविंदके आभरण अनवट विछिया पग पान श्री हस्तके आभरण
 हत सांकला मुद्रिका श्रीकंठके आभरण यथा स्थान पहरे हार माला मू-
 ठके होइ सो और घटे तो श्रीगुरुजीके हार माला मित्त्यमें सु धरे
 हार कहीको जुहीको चंद्रहार गुंजा दीकी समे भये गवळ होइ ज्वरा
 आरोगे मलना सुले मलनामें भोग जन्माष्टमीक
 भोगमंदिरमें श्रीगुरुजी श्री बालकृष्णजी श्री मदन मोहनजी श्री
 महाप्रभुजी पधार पाटपर दूसरे स्वरूपके पास अरगजाकी वर
 नी सीसी गुलाबजलकी आरसी छोटी सोनेकी झारी श्रीजमुनाज-
 लकी सब स्वरूपनकी दूसरे स्वरूप सधां फूलकी माला पहराके
 श्रीगुरुजीकं श्रीनाथजीकं दूसरे स्वरूपकं माला २ श्रीबालकृष्ण-
 जीकं श्रीमदन मोहनजीकं श्रीमहा प्रभुजीकं श्रीशालिग्रामजीकं
 सब स्वरूपनकं माला पहराय चुके ता पीछे आरतीकी थार प्रगटे
 दंडवत करे श्रीस्वामिनीजी पधार श्रीगुरुजीकं तिलक अक्षत वीड
 २ दूसरे स्वरूपकं तिलक अक्षत वीड २ नये नारियल २ कंकू-
 की लकीर करके २ रुपैया भेट धरे श्रीमदन मोहनजीकं श्रीबाल-
 कृष्णजीकं श्रीशालिग्रामजीकं तिलक अक्षत मुठिया वारे के चुनके
 दीवलाकी आरती होइ नौखार होइ माला सब स्वरूप पहर चुके
 दंडवत कर झालर घय शंखनाद बधाई गावे झांस परवावज कजे
 नौखार होइ तहां ताई श्रीमहाप्रभुजीकं तिलक नहीं श्रीगुरुजीकं
 अरगजासु माला खिलवे और गुलाल नहीं चोवा अवीर खिलायकेके
 तिलक करे ऐसे ही दूसरे स्वरूपकं खिलायकेके तिलक आरती नोखा-
 वर होइ चुके थार सोने श्रीगुरुजीकी दूसरे स्वरूपकी श्रीबाल-
 कृष्णजीकी श्रीमदन मोहनजीकी पांचो भात मीचे शाक पाटिया
 छडियल दार तीन कुहा बडीके शाक २ कचरियानकी थारी पापड
 तिलवडी देवरी मिरचे फल खेके शाक भाजी भुजेना सब तरहके
 कंदके सक कंद वेगन नहीं अनसरवडीमें आगेकं देकरा पंजीरीको
 फेनी स्वत को फेनी केसरीको शीतल भाग शिखरन वडी कोडवरा
 गोपाल कलू भमे मठडी दूध घरको साज सब मारवनमिश्री मलाई
 हांडी मलडा दूधके पेडा श्वेत दूधपूरी केसरी वरसी वासौंधी
 श्वेत केसरी मीगे दही खेके दही एक कटोरा शिखरनको अघे

कीमें मिगईकी धार चालनी सब तरहकी कदली फलदिक मिरच कुरा
और नित्यभोग सब आवे पलनको भोग आवे खोर नित्यसु दुनी राय-
ता २ बडी छाछकी चपटिया मैदाकी पूरी विठसाख करंदाको राक
भुजेना सब तरहके

दूसरे स्वखपको धार मूग तीन कूज दार पाटिया न्यारो आवे और
भोग सब मेले समय होइ भोगसर पाट नीचेको और सरकाइ लेंड
श्री गकुरजीके आचमन मुरवजअ वीडे दूसरे स्वखपकू आचमन मुख-
करअ वीडा आरोग चुकें आरसी बडी दिखोवे श्री गकुरजी सिंहासन-
र पधारें दूसरे स्वखपको शृंगार बडो करे खवमे माळा वीड साडी
घोली लहेगा भेटके नारियल रूपैया अरगजाकी वली गुलाबजलकी
सीसी आरसी छोटी शय्या मंदिरमें मूढके पास कौरव पर धरें अभि-
रन मूढकी पेटीमें धरें राज भोगकी माला पहले पहरलेंडू सब स्वखप
साई रही आवे फेर नहीं पहर तिलकके वीड श्री गकुरजीके पास
जेवनी ओरकू वीड २ वाम ओर कू धरें दरसन खुलें आरसी देखें
आरती थारकी सोनेके दीवलासी होइ श्री गकुर जीकी श्रीमदनमोह-
नजीकी माला बडी नहीं होइ श्री शालिग्रामजीकी श्री महा प्रभुजीकी मा-
ला बडी होइ शय्या पर केशरी चादर ओढें अनोसर होइ वंग ४-
डूखयचैकी लोंगको जावित्रीको जायफलको जन्माष्टमीकू वा दूसरे
उत्सवकू पछटे.

उत्थापनके समय श्री गकुरजीकी श्री बालकृष्णजीकी श्रीमदनमोहन-
जीकी माला बडी करके पास धरें संध्या आरती पाछे श्री गकुरजीके
माला वीड खवमेके माला वीड उठे वरअ मूढमें धरें उत्थापन भोग
संध्याभोग भेले आवें तासुं इगरी १ श्री गकुरजीकी अधकी भरीजाय
समय होइ भोग सरें आचमन मुरवसख वीडा ६ माला पहरें पाटचैकी
सरकावे गेंद चोगान तिथी धरें दूडी गट्टिन नावे १ घडी तिथी गेंद चोगान
उठे पाट सरके चैकी खडसु लगावे संध्या आरती होइ
शृंगार बडो होइ वागा बडी होइ श्री कूठमें चैकी रहै कुलह पर ताइ
त हन्यो रहै ग्वाल होइ डवरा आरोगें शयन भोग आरोगें रताळको
ग्राक छडी यल दार कडाकी छाछ पापड ४ जलकी क्येरी लोन सधा-

आरती के समय में जो भी भोग करे उसे पहले पहर लेंडू सब स्वखप साई रही आवे फेर नहीं पहर तिलकके वीड श्री गकुरजीके पास जेवनी ओरकू वीड २ वाम ओर कू धरें दरसन खुलें आरसी देखें आरती थारकी सोनेके दीवलासी होइ श्री गकुर जीकी श्रीमदनमोहनजीकी माला बडी नहीं होइ श्री शालिग्रामजीकी श्री महा प्रभुजीकी माला बडी होइ शय्या पर केशरी चादर ओढें अनोसर होइ वंग ४-डूखयचैकी लोंगको जावित्रीको जायफलको जन्माष्टमीकू वा दूसरे उत्सवकू पछटे.

(शुद्ध)
ना बड़ी साक शय्या न पर बंगला ठाढ़े होइ जजक वा डकके दि-
वाल गौरी तिनारीमें शयन भोग सरे साकको जोड पहरे शयन आरती
होइ अनोसर होइ

www.vallabhacharya-agrahar.org

भादों सुद ९ कू
शृंगार पहले दिनको जन्माष्टमीके वत्त वागा धरे छडीयल दार पकोडी
की कड़ी पापड मिरचको साक भोजेना दंडको गोपाल वल्लभमें से-
के लडुवा.

भादों सुद १० कू
तुवर की दार वडीकी कड़ी

भादों सुद ११ कू
दान वरुन कसूमल ओढनी वागा नहीं धरे मुकुट लाल प्राचीनजो-
डीलाल प्राचीन कुंडल मकराकृत शृंगार दुहरो ठाढ़े स्वरूपके व-
छने लकोयलके रंगकी चोटी नहीं धरे दान वामन भेले होइ तो
चोटी धरे हमेल फोदना पर प्राचीन धरे पिछवाई दानकी गेंद
चौगान सेजेकी केरारी जोड गोपी वल्लभमें भातकी थार छडी-
यल दार पकोडीकी कड़ी पापड मिरचको साक छेके साक २ अन-
सरवडीमें पाट पर हांडी १ दूधकी दहीकी २ मीठे दहीकी मीठे शा-
क और सब नित्यवत् रोटी नहीं राजभोगमें गोपाल वल्लभमें म-
नोहर के लडुवा मीठे शाक आधो पाटिया और सब नित्यवत्
वडीको शाक पापड तिलवही टेवरी दूधको क्येरा दही नहीं
दान वामनजी भेले होइ तो अभ्यंग होइ केरारी ओढनी ओढे शृं-
गार सब दानको ठाढ़े स्वरूप होइ काछनी कसूमल केरारी पिछ-
वाई जन्माष्टमी की संध्या आरती पीछे केरारी कुलह धरे गोपी वल्ल-
भमें आरको पाटिया दानकी हांडी ३ मीठे स्याक गोपाल वल्लभ होइ
आरोगे मनोहर के लडुवा खेवाके गुंडा वराम मिथी की उलो सेव
पलनमें उत्सवको सधाना

भादों सुद १२ वामन द्वादशी कू
अभ्यंग होइ शृंगार केरारी कुलह ओढनी हीराकी जोडी कुलह
पर पान हीराको तीन चंद्रिकाको जोड सादा शृंगार इक हरो नाल

हरी हार हीराके फोंदना पर प्राचीन हमेल सांझ कू शृंगार बजे होइ कुलह रहै गोपी बहू भमे आरखे पाटिया मीमे शकर उत्सवको संधाना राजभोगमें छडीयल दार पकोडीकी कढी पापड तिलवडी देवरी वडीके साक २

गोपालबहू भमे खोवके गुझा उत्सवके संधाना मीमे शकर कये. रीनमे दूधको कयेस निलके अनसपडीको शाक भुजेना धारीमें आवे रायता कयेरीमें छडीयल दार पकोडीकी कढी पापड तिलवडी देवरी

राज भोग सरे सब स्वरूपन कू माला पहरावे दरसन खुलें श्री जमुनाजलको झारी १ भरे पंचामृत होइ श्रीबालकृष्णजीके स्नानके मेडापर कंकुको अष्टदल मांडके श्रीगुरुजी कू दंडवत करे श्रीबालकृष्णजीके पडापर पधरावे शालर घंघ शंखनाद तिलक अक्षत चरणारविंदमें पंचामृत शंखमें तुलसी समपे आचमन प्राणायाम संकल्प विष्णुरित्यादि युथा नाम्नि संवत्सरे दाक्षिणायने वर्षा ऋतौ भाद्रपद शुक्ल १२ शुभयोगे शुभकरणे एवंगुण विशेषण भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य वामनावतार प्राहु भोवोत्सवं कर्तुं तदंगत्वेन पञ्चामृत स्नानमहं कारयेष्ये - प्रथम दूधसों दहीसों घृतसों वूरासों मधुसों शीतले जलसं चंदनसु उष्णजलसु अंग वरज कर पीतावर उठावे श्रीगुरुजीको गादीके पास जेवनी ओर पधरायके तिलक अक्षत तुलसी श्रीगुरुजीके चरणारविंदमें समपे श्रीबालकृष्णजीके चरणारविंदमें तुलसीसमपे माला छोटी पहरावे टेरा रेखेने श्रीशालिग्रामजीके पाठपे पधरावे भोग धरे दही भात निलको संधानाकी कयेरी शीतल भोग दूधकी हांडी मीमे शकर कढी फलादिक संधो नोन मिरख बूरा चाहेनी सब तरहकी सिधोडाकी सेब सौरा देर वडी पूडी कढी साक भुजेना सब तरहके कंदके शकर कंद वेगन नहीं रायता झारी श्रीजमुनाजलको पास धरे.

भोग सरे आचमन मुखवरज वीडा २ धरे पाट चौकी सरकोवे

श्रीबालकृष्णजीके श्रीगुरुजीके

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 1

www.vallabhacharya-agrahar.org

www.vallabhacharya-agrahar.org

(Pushchimargiya Research Portal)

Shri Tatiji Maharaj Ki Pustak

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

त्रयै धरे गैद वौगान धरे आरसी बजे देखें राज भोग आरती होइ मख
सब स्वरूपनकी बडी होइ बाल कृष्ण जीकी माला खेटी जन्म समयकी
रहै सो उल्लासके समय बडी होइ

अनोरकी सिंहासनकी राख्यानकी द्वारा भरे निखर रायन समय
कुलहपे ताइत रहै श्री कंटमे चौकी दान वामनजी भेले होइ तो दूसरे
दिन शृंगार वरुन केशरी कुलह हीराकी जोडी शृंगार भारी तीन वं-
द्रिकाकी जोड आधो पाटिया मीठे शाक पकोडीकी कढी हमल धरे
दान एका दशीसुं आश्वन वरी १६ ताई दोइ दिना जडाऊ फिरते मुकु-
टकी शृंगार एकीदिना और शृंगार होइ मनोरथसुं हांडी आरोगे
दूधकी कोई दिना मीठे दहीकी दानके १८ दिन ताई चोटी नहीं धरे
मुकुटके शृंगारमे

पिछवाई चंदोवा छोटके आश्वन वरीमे १८ दिन सांझी पहा पे
मडे और ३० कुं कोट

॥ आश्वन वद १ ॥

एक मसुं मावस ताई रायन समय फूलकी छडी गैद गारीके पास
धरे

॥ आश्वन वद २ ॥

आश्वन वरी ८ कुं श्री हरिरायजीको उत्सव मुकुट शृंगार हरे
श्याम वरुन नहीं

॥ आश्वन वद १२ ॥

आश्वन वद १२ कुं श्री गोपीनाथजीको उत्सव वरुन केशरी का
रुसुमल जोडी लाल वा हीराकी शृंगार मुकुटकी वा कुलहको
विशेष करके कुलह धरे हांडी मलडा दूधके तुअरकी दार
पकोडीकी कढी

॥ आश्वन वद १३ ॥

आश्वन वद १३ श्री बालकृष्णजीको उत्सव वरुन केशरी श्रीम-
स्तक पर कुलह पांच चद्रिकाकी जोडी हयो वा लाल वा वा
हीराकी हांडी मलडा तुअरकी दार पकोडीकी कढी

॥ आश्विन वद १४ ॥

आश्विन वद १४ कुं शयन आरती कोटकी उतरे सिंहासन कोटकी
पिछवाई हांडी की

Cure Mota Mandir - Pracheen Kram 1

॥ आश्विन वद ३० ॥

आश्विन वद मावस कु पाग को शृंगार टोपी के शृंगार बंद वैजसुरी
११ सुं टोपी मुख अष्टाद सुदी १४ ताई श्रावण सुं बंद भादों वद

(Pusotimargiya Research Portal)

॥ आश्विन सुद १ ॥

आश्विन सुद १ कुं पर्वको उत्सव वरत्र छापाके वागा धरे
खुले बंदको कुलह धरे कुलह पे पना तुरी हीराके पान चंद्रि
काको जोड जोडी हीराकी शृंगार दुहरो उत्सवके हार माला क
लीको हार वल्लु भी हार जुहीको हार चंद्र हार कस्तूरीकी माला
आरसो बडी देखें गेद को गान सोनेके वेत्र चौपड जडऊ गारी
हीराकी

गोपीवल्लु भमें भातकी धार छडीमलदार तीन कुड पापड छेके
शाक २ मीगे शाक श्रीगकुरजीकुं अभ्यंग होय श्रीमहाप्रभुजीकुं
आभरण गुंजा पहरें अभ्यंग नहीं पिछवाई छापा वंदुवा छापाके
एकमसुं नौमी ताई छापाके वरत्र पोंदना धरे गोपीवल्लु भमें पा
टिया पापड आरोगे गोपालवल्लु भमें मनोहरके लडुवा आरोगे
~~उत्थापनमें चालनी सब तरहकी सन्न भोगमें~~ आधो पाटिया पापड
तिलवडी टेकरी हांडी मलज दूधके सिक्को अन्न नहीं आरोगे
उत्थापनमें चालनी सब तरहकी राजभोगमें वजकी छाछके ड
बरा दूजसुं दशहराके पहले दिन ताई आगेकी उवरीया पाटि
याकी पापड आरोगे जवारा बोवे मूलनक्षत्रमें

॥ आश्विन सुद २ ॥

आश्विन सुदी २ कुं गोपीवल्लु भमें तथा राजभोगमें खंडरकी
कडी मिरचको शाक रायता छाछ मीगे कडी कोरी आरोगे शयन

में हू मींगी कदी आरोगे गोपाल वल्लभ में श्वेत कावर
आश्विन सुद दूजकं वरुन हरे वा पौरे जोडी लाल वा हीराकी श्रीम-
स्तकपे चोरी वा दुमाला वा पगा (का टिकावा)

www.vallabhacharya-agrahar.org

॥ आश्विन सुद ३ ॥

आश्विन सुद ३ कं गोपाल वल्लभ में बुंदीके लडुवा राज भोगमें गो-
पी वल्लभ में वेसनकी सेवकी कदी मिरचको शाक सेवकी रायता छाछ
कोरी सेव

॥ आश्विन सुद ४ ॥

आश्विन सुद चौथकं श्रीदामोदरजी महाराजको उत्सव दुहरो
नेग आरोगे इक हरो नेग श्री विठ्ठलरायजीके उत्सव वत् आरोगे बुंदी
जलेनी छडियल दार तीन कूज पापड आखो पाटिया मीठे शाकर
हांडी मलडा २ वडाकी छाछ चपटीया दूसरे नेगमें मनोहरके लडुवाको
बडो बाल भोग आरोगे गोपी वल्लभ में मेवा भात बुंदीकी मींगी कदी
आरोगे उत्सवको सधाना चोलाकी गुंझिया पल नामें थपडी पल नामें
दाख मेवाकी खिचडी पीकी सेव राज भोग में पकोडीकी कदी तुआरकी
दार बुंदीकी छाछ क्वरिया नकी धारी तिल वडी देवरी मिरच फल
खीर संजावकी चोरवाकी

उत्थापनमें खोवा मलाई दुहरे पीकेमें सेव थपडी चालनी सब तर-
हकी सब समयके तथा अनोसरके झारो माला बीडा दुहरे
चौथकं वरुन केरारी डोरियाके गोल पाग लुमकी कलगी हरी जोडी
अलक धरे करणपूल २ शृंगार हलको गुंडे स्वल्प वागा पटका गोल
पाग अलकावली

॥ आश्विन सुद ५ ॥

आश्विन सुद ५ कं मोहन धार गोपाल वल्लभ में पकोडीकी कदी मि-
रचको शाक रायता छाछ कोरी आरोगे गोपी वल्लभ में राज भोगके
Mota Mandir

॥ आश्विन सुद ६ ॥

आश्विन सुद छटकं दूध पूजा आरोगे गोपाल वल्लभ में राज भोगमें गो-
पी वल्लभ में वेसनकी देवी सरकजीमें होइ दही लोन वेसनमें मिलायके करे

तासी कीदि मिरचको शाक रायता छछ कोरी आरोगे

॥ आश्विन सुद ७ ॥

आश्विन सुद ७ मीकू गोपाल वल्लभमें दहीके आरोगे गोपीवल्लभमें
राज भोगमें बूंदीकी कयी मिरचको शाक रायता छछ कोरी आरोगे
मीठी कयी बूंदीकी रायनमें ह आरोगे मूलनक्षत्र होइ ता दिन राजभो
ग सरै पीछे सरस्वतीजीको भोग साजने

॥ आश्विन सुद ८ ॥

आश्विन सुद ८ मीकू गोपाल वल्लभमें दहीके मनोहरके लड्डवा आरोगे
गोपीवल्लभमें राज भोगमें आठ कूड़ाकी कयी मिरचको शाक रायता
छछ कोरी आरोगे

॥ आश्विन सुद ९ ॥

आश्विन सुद ९ मीकू दशहरा नहीं होय तो गोपालवल्लभमें रसकी
पपची आरोगे गोपीवल्लभमें राज भोगमें पुत्रवडाकी कयी मिरचको
शाक छछ कोरी आरोगे पाण्ड पाटिया पर्वसु दशहरा ताई आरो
गे शांझुं कसूमल पाग मीसपूला हीराने आजसुं सालाको ओषो
जोड बंद

॥ आश्विन सुद १० ॥

दशहराके मंगल भोगमें आखो दिनमें बडे बाल भोग सेवके लड्डक
को आरोगे जरीकी ओढनी ओढे वा आत्मसुख श्रीमहाप्रभुजीको आभ
रण गुंजा पहरे श्वेत जरीकी ओढनी ओढे आरती धारीकी दशह
रासुं दिवारी ताई रायनके दरान खुले शृंगार अभ्यंग वस्त्र श्वेत
जरीके श्रीमस्त रूपे चौरा छज्जे हार जोडी लाल प्राचीन शृंगार दुह
रो आभरण हार माला सब तरहके उत्सवके नित्यके हार कलीको
वल्लभी जुहीको चंद्रहार चंद्रका सादा बूहगी एकनगी लाल कर्णफूल
४ गोपीवल्लभमें आखे पाटिया मीठे शाक उत्सवके सधाना-पठ
नामें बदा ममि श्रीकी डेढी सेव

दसमी को दशहरा होइ तो मुरली धरजीको उत्सव भेले होइ
मुरली धरजीके उत्सवको प्रकार बूंदी शकरपारा हाडी मलडा

नौमीको दसरा वा होइ तो दसमीकूं आधो पाटिया मीये ग्राक हांडी मलडा बूंदें धकर पारा गोपाल वल्लु भमें रसकी पपची पकौडीकी कढी छडीयलदार पापड बडीको एक शाक गोपीवल्लु भमें भातको थार नौमीको दसरा हांडी होइ तो गोपाल वल्लु भमें खोनाके गुंडा आरोगे उत्सवको सधाना और पहले छिरयो है छडियलदार तीन कूडा पापड बडीके शाक २ कचरिया पानकी थारी तिलवडी देवरी मिरन फूल हांडी मलडा नहीं कंदके शाक भजेना कडाकी छछकी चपडीया चंदका पिछवाई सिंहासन रुपहरी जरीके सिंहासन कचको गेदचौग सोनेके वेन जडाऊ आरसी कडी देखें अनोसर भये पीछे तिवारी खडीकी देहरी माडें चौकमें दसहरा माडें।

साझकें उत्पादन भोग आय चुके पीछे जवाराकें शंखेदक करे कलंगी पीरे रेसामसु बांध राखे ४ एक थारीमें जवारा कलंगी बीज २ कंकु अक्षत तुलसी दल एक थारीमें कंकुको अष्टदल करके चूनके दीवला मुठिया सिद्ध कर राखे।

भोग सरें भावमान मरुकरत्र बीज माला पहरोके त्रयी पाट चौकी गेद चौगान आधे दर्शन होइ चुके पाट सरकाके खंड रहो आ के अष्ट दलकी आरती प्रगटें दंडवत करे झालर चंव शंखनाद होइ तिलक करे अक्षत चोटाके चंद्रिका कडी करे श्रीमस्तकपै तुल कलंगीके पीछे जवाराकी कलंगी गंके चरणारविंदमें तुलसी समपी चरणारविंदपै जवारा धरें बीज दोइ धरें श्रीबालकृष्णजीके श्रीमदन मोहनजीके श्रीशालिग्रामजीके श्रीमहाप्रभुजीके तिलक करे अक्षत चोटे जवारा धरें मुठिया वारके आरती उतारे टेरा खेवें झारी श्रीजमुनाजलकी १ भरें भोग आवें संध्या भोग सेव लडुका सधानाकी कचेरी माठ हल उत्सवके सधानाकी कचेरी हांडी दुषवीये शाक वाहनो सब तरहकी तुलसी शंखेदक धूप दीप होइ भोग आय चुके दसहराकें वस्त्र उगवे छेये व के अक्षत जवारा धरें।

भोग सरें बीज ४ धरे दोइ उत्सवके दोइ नित्यके खंडसं चौ लगवे दर्शन खुले संध्या आरती थारी की होइ शृंगार बडी ले

चौरापै आभरण अलकावली सिरपेच लड सीस फूल रहे आवे जवार
 कलंगी कडी करके दूसरी जवारकी कलंगी धरे श्रीकंठके आभरण
 सब रहे वेसर करण फूल २ हत फूल २ श्रीकंठमे मालाके ठिकाने
 हरे हरे माला धरे गारा के हरी माला ३ कडी २ हार २ हीराकी दुग-
 दुगी पहनी रहे www.vallabhacharya-agrahara.org

शयन भोग आइतके आठ रातोंके चढ़े मालाको जोड बंद रख-
 नके दरसन खले दोइ दीवी वनकी आगे धरे पौढती समय चौरापै
 सीस फूल सिरपेचके ठिकाने रहे एकादशीके शृंगार येही दसमीसु
 रूप चौदस ताई शयनके दरिन होइ पागपै का चौरापै दूम तुरी
 धरे सीस फूल सिरपेचके ठिकाने धरे पौढती समय वागा बडे होइ
 चीरा बडे करके पाग बांधे दशहरासु काविके सुही १२ ताई जरीके
 वागा वस्त्र धरे दशहरासु शीतलाई होइ तो भीतर पौढे सुपेती वंग
 शीतकालको विछै दशहरासु गरमी होइ तो सुजनी सीलुकी विछै
 शयनके समय मंदिर धुवै साजवाहर ले मूढकी ढकना केसीराके
 पुनमकी शरद होइ तो एकादशी कं शृंगार दशहराको द्वादशीते-
 रसके शृंगार मुकुटको होइ चौदसके हलके शृंगार होइ
 चौदसकी शरद होइ तो एकादशी द्वादशीके मुकुटको शृंगार तेरसके
 हलके होइ

पुनमके वा चौदसके शरद होइ तो गोपाल वल्लभमे मोहखे ल-
 डुको आधो पाटिया छेडियलदार पकोडीकी कवे मीवे साक कवे-
 रीनमे आरोगे पापड कडीको शाक पिछवाई सिहासन रासके निज-
 मंदिरमे स्वेत जरीको चंद्रकातिवारीमे तारानको श्वेत चंद्रका बांधे
 वंग चीरनो विछै सुजनी रेसमी श्वेत विछै पहंगपोष श्वेत विछै
 महाप्र मूजी आभरण गुंजा पहरे शय्या पर उपरना श्वेत ओढे मू-
 दके ढकना चौरसा श्वेत श्रीगुरुजीके अभ्यंग होइ वागा श्वेत ज-
 रीको ओढनी सुनहरी झालरकी ओढनी पे हार दरीया चीरो पीता
 वर ओढे मुकुट हीराको जोडी हीराकी शृंगार सब चांदनीको द-
 हरो होइ उत्सवके तथा नित्यके हीराके हार हीराकी दुगदुगीकी
 माला धरे उत्सवको कलीको हार जूहीको हार चंपकलीको चंद्रहार

सोनेको करचुरीकी माला फोंदना बडे धरें फोंदनापै हमेल हीराकी चो-
 ये नहीं शरदेक तथा गोपाष्टमीकुं कमल पत्र होय आरसी बडी देखे
 वेणु हीराकी वेन चोपड जडाऊ पट श्वेत जरीको गेद चोगान रूपके
 शयन भोगमे छडियत दर आरोगे शयनके दसन नही होइ तिव-
 रीमे सिंहासन पिछवाइ श्वेत तिवारीमे चोकमे बिजाइत विछे चोकमे
 सांगामाची रहे तिवारीमे शय्याको सब साज रहे भोग सब आवे
 सिंहासन खंड राज भोगके समय विछे तस ही विछे पाट चौकी नही
 झारी दुहरी गकुरजीकी सिंहासन पर शय्या पास श्वेत शाला चडे
 अरगजाकी करनी हीराकी कुंजा आव खोरा वंग जडाऊ एक नयन
 पेको बीडा २ अधकीमे फूल दान पास धरे

उत्सवको भोग श्वेत सामग्री दूध धरकी दूधकी हांडी मल्लज माखन-
 मिश्री दूधपुरी पेडा करकी वासोधी मलाई मीगे दही
 रसखोरा मिश्रीको पना मेवा मिण्डकी थार नित्यको वंग
 अनसखडीकी सामग्री मीगे कचौरी गुजराती खाजा चंद्रकलावों
 री वको **Shri Tatji Maharaj Ki Pustak**

खीर शिखरन कडी कडाकी छछ छोक्यो दही कचौरी मंग
 दारकी गुंझिया मीगे शाक मैदाकी पूरो फड फडैया बना चमाकी
 दार चालनी सब तरहकी मुरब्बाकी कचेरी रायता १ शाक १
 वा २ भुजेना २ वा चार तर मेवा कदली फलादिक लोग भिरन
 वृग उत्सवको सधाना चांदनी श्रीमुख पर आवे तव थारीकी आरती
 दोइ उतरे एक शयनकी एक उत्सवकी राई नोन नोछावर होय
 शृंगार बडो करके बाहरकी खिडकीकी पाग बांधे श्रीगकुरजीग
 स्वरूप पोटें शित लई होइ तो खोल ओढे रजाई ओढे रजाई
 पर खोल ओढे सिंहासनके आगे गारी तकिया रहें दूसरे चोपड
 मांडें आभरण तब कजेमे लपेटके शय्याके नीचे धरे आभरणके क
 लमदान धरे नौ चौकिया आकासी पे गढे स्वरूपकु काछनीये
 त जरीकी लाल जरीकी दूसरे दिना शृंगार मुकुटके दस हरासूं
 मूढके वस्त्र जरीके धरे वरस दिनके नये बडे वस्त्र वागा सुवन
 तनीया पटका पाग रहै आवे अधकी रंगील वस्त्र पलटें जरीके धरे

शीतकालमें जरीके तथा रेशमी बड़े धरें कार्तिक वदीमें एकादिना दस-
मीको शृंगार एकदिना धनतेरस को एकदिना एकादशीको एकदिना
खण्डको एकदिना द्वादशीको एकदिना दिनारोको एकदिना
जरीके वस्त्र पीरो दुमाला एकदिना मुकुट दुमालाको धरें एकदिना
पीरो रिपारा लाल पेच एकदिना लाल रिपारा पीरो पेच आश्विन सुदी
११ सं लेके कार्तिक वदि ९ लाई शृंगार होइ दिन घटेवो कार्तिक
सुदीमें होइ कार्तिक वदि १० सं नगारखाना बैठे अन्नकूट ताई अन्न-
कूटके शृंगार होइ दसमीसुं गादी तकिया नकी पाट चौकी की श्वेतखो-
ली उतारें गादी वस्त्र श्वेत नहीं मखमलको रहि दसमीसुं शृंगार
वस्त्र श्वेत कारचोकके श्वेत वस्त्र पर सुनहरी किनारीको चौरा वा को-
मल कारचोक होइ तो कारचोकको चौरा छज्जेदार लूमको कलंगी
सुनहरी धरें हरी जोडी हांस नहीं श्रीकंठमें कंब भरण ताइत हयो
हर ताइतकी त्रिवल जुगनु धरें एक हीरा माला दोइ कर्णफूल
दोइ दोइ हस्तफूल गादी पर हरी माला वैणु हरी शृंगार हलके
गोपाल वल्लभमें सेवके लडुवा आरोगे और दसमसुं भाई दूज
ताई पौठती विरिया चौरा रहे सोसफूल सिरपेवके ठिकाने

॥ कार्तिक वद ११ ॥

के दिन वस्त्र केजनीजरीके छज्जेदार चौरा स्यामजन्मावकी
कलंगी धरें हीराकी जोडी कंठमें कंबे वदी दुगदुगी धरें छोटें फोंद-
ना धरें कर्णफूल चार धरें श्रीहस्तमें रत्नचौक गादी पर एक हार
हीराको और हीराकी दुगदुगीकी माला पै धरें शृंगार हलकेसुं
कछूक भारी गोपाल वल्लभमें सेवके लडुवा आरोगे एकादशीसुं
टाट वदीके तकिया पाटचौकीकी खोली और आज सिंहासनपर रावन-
समय छोटें कावको बंगला धरे द्वादशीकं छातको धरें तेरसको एक
बंगला सिंहासनपर २ चौकी आसपास माडके बंगला धरे ॥

॥ कार्तिक वद १२ ॥

के दिन पीरी जरीके वस्त्र छज्जेदार चौरा चांद्रीका कामको जोडी
हरी कर्णफूल ४ श्रीहस्तमें हत सांकला रत्न चौकी मध्यके फोंदना

धरें फोंदना पै हरी माला गादी पै हरे हार २ हरी मालाये शृंगार
मध्य तांई गोपाल वल्लभमें मेवायै आरोगे।

Core Mota Mandir Pracheen Kram 1

धन तेर सके दिन शृंगार वरन् हरी जरीके छज्जे दार चौरा चांदिका
सादा लाल जोडी कृष्ण फूल ४ श्रीहस्तमें हव साकल मुद्रिका फूल
२ धरें फोंदना बडे धरें फोंदना पर लाल माला गादी पै हरे हार
लाल माला पै शृंगार भारी सोनेके वासन मेकसे चंदुना पिछ वाई
हरो जरीके चोपड मीनाकी गोपी वल्लभमें भातकी थार छडियल दार
पकोडीकी बढे मीये शाक पापड

राज भोगमें आधे पाटिया मीये शाक पापड वडीको शाक
गोपाल वल्लभमें फेणी आरोगे हांडी मखडा दूधके संजावकी खीर
चोखाकी नही

॥ कार्तिके वदि १४ ॥

रूप चौदस सं भाई दज तांई जखऊ तरिया वंटा कुंजा आवरोरा
लंबी गादी श्री गुरुजी विराजे प्राचीन गादी पै गेद चौगान सोनेके
चोपड केअ जखऊ आरती थरीकी रूप चौदस कुंजा पिछ वाई
सिंहासन सुन हरी फुर कसाई जरीके श्रीमहा प्रभुजीके श्रीगुरुजी
कुं उवटनासु अभ्यंग होइ आभरण गुंजा धरें वरन् सुन हरी फुर
क शाही जरीके छज्जे दार चौरा चांदिका सादा हीराकी जोडी फोंदना
बडे फोंदनाकी मालाकी धरें सो मालानके ऊपर हमेल ताइतनकी
हरी १ लाल २ हीराकी इच्छ होइ तो धरें गादी पर शृंगार दोहरो
हार माला उत्सवके तथा नित्यके सव धरें जन्माष्टमीवत फोंदना
की गादीकी कठल जैसी हमेल एक हू नही धरें ताइतकी हमेल ध
रें हरी हीराकी मंगल आरती भये पीछे टैरा खेचें स्नानके ककल
पर श्रीगुरुजीके पधराके तिलक करे अक्षत चोटें तिलककेवी
अ पारपै धरें अक्षत वडे करे अभ्यंग करे दोसही श्रीवाल
कृष्णजीके श्रीमदन मोहाजीके श्रीमहा प्रभुजीके रूप चौदसके गोपी
वल्लभमें आखो पाटिया मीये शाक उत्सवको सधाना
राज भोगमें मीये शाक छडोयल दार तीन कुंजा पापड दिख वडीके

गधा भाक दरे धर

गधा धरदर धर

www.vallabhacharya-agrahar.org
www.vallabhacharyakrupa.org
(Pushimargi Research Portal)

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Mahant
Mota Mandir

वरी मिरच फल कचरियानकी थारी
 गोपाल वल्लभमें पूजा घृतकी कयेरी वृराकी कयेरी हांजी मखड़ा उल्ल
 वकी संधाना वडाकी खालकी चण्डीया सज्जानकी खीर दूनी चोखा नहीं
 पलनामें बदाम मिश्रीकी डेली सेव
 उत्थापनमें बदाम मिश्रीकी डेली सेव चालने सब तरहकी
 सांझकू चौरापे कातकी हृदयी तामें सिंहासन काचको तामें उत्थापन
 भोग सरे पीछे विराजे गुंजा आवरोरा श्रीजमुना जलके भरे मालू पह
 रे भोगके दर्शन खुलें समय होय झारो भरे संध्या भोग मखड़ी स-
 धाना २ रूपैया २ की सामग्री दूध घरकी आरोगे संध्या आरती पीछे
 शृंगार बजो नहीं होइ शयन आरती समय फेर विराजे शयन आरती
 होइ नौछावर होइ मंदिरमें पधार शृंगार बजो होइ वीरा सीस
 फूल सिरपेचके टिकाने रहे ।

पलनाके वालिस्तकी शय्याके वालिस्तकी थैलीं कस्तूरीकी थैलीं
 तीसरे वर्ष पहरे

॥ कार्तिक वद ३० ॥

दीप मालिका संग्रह भोगमें आरवे दिनमें बजो बाल भोग सेवके
 लड्डुवाको आरोगे सिंहासन पिछवाइ चहुवा मुढके ढकना रूपही
 फरुख शाही जुरीके साजे श्वेत फरुख शाही जुरीकी वा फिरती
 चोली खुलती लहंगा लाल की मखापको वा वरभके मेलको वागा
 सुधनर फटका चौरा तनीयां श्वेत मुढमें धरने आरती रूप चौरस
 तथा दिवारी तथा अन्नकूट तीने उत्सवकू थारीकी होइ भाइ दूजकू
 भी आरती थारीकी होइ झारी दिवारीसु भाइ दूज ताई श्रीजमुना
 जलकी भरो जाय दिवारीकू गोपी वल्लभमें तथा राज भोगमें रूपनो
 दसवत् सब आरोगे उत्थापनमें दिवारीकू गोपाल वल्लभमें दीवला
 की थार आरोगे रूप बौदेसकू दिवारीकू अन्नकूटकू भाइ दूजकू
 श्रीमहा प्रभुजी आभरण गुंजा पहरे दसमीसु भाइ दूज ताई फुले
 समेपे वार तिथिका बाधकनही दिवारीकू श्रीकुरजीकू श्रीमहाप्र-
 भुजीकू उवटना सहित अम्भग होइ वरभ श्वेत फरुख शाही जुरी-
 के श्रीमस्तक पर कुलह खासाको वागा सइ जुरीके वागामे नया
 मुकुट वरभ धरे जोडी आभरणको फोदना प्राचीन हमेल सबज-

दिवारीके दिन सेन आरती पहले मंदिरमें होइ ता पीछे श्रीनक-
नीत प्रियजी त. श्रीनाथजी त. बडे लालजी सुख पालमें विराजके
कान जगायवको पधारे बीडी अरोगते अरोगत पधरावने ओर
सगरे सख पनकू हटरीमें पधराइ देने कान जगाइके पीछे प-
धारे सो हटरीमें विराजे पधारे सुख पालके भीतर
आरती च होइ पेर हटरीमें विराजे हसण सुखे बीडी अ-
रोगे पेर हटरीको भोग सजे सीतल भोग हटरीके भोगके संग
आके ताकी मिश्री से. १। पीसी तामें जल से. ३।। सुगंधी इलाइची
की तो. 1 पधरावनी गुलाबजल मिलावनां पेर कंकूके अष्टदल-
की आरती. होय सुगीया चूनकी वरनी पेर पीछे भीतर सिजापे
पधारे पेर माल धरके दूसरी हटरीकी आरती भीतर होइ चू-
के दीवलीकी भेट नोखवरे होइ त. राईलोन होइ.

सुख पालमें
पधारे ताके
पीछे

श्री गोवर्धन पूजा करवकी विगति. सुखपालमें श्रीवकुरजी
पधारे ता विरीया पीतांबर एक आधी धरावनों ओढनी की सी
नाई नही धरावनों दोऊ छेडे भेले करके धरावनां त. वेणके
त्र पास रहे बीडी अरोगते पधारे त आधी बीडी अरोगे पेर
नोनोकियापे विराजे तहां आधी बीडी अरोगावनी पेर बीडी
अरोगे पीछे दूधकी हांडी अरो गावनी पेर सुखपालके आठे
चोरसा टक वाइ लेने पेर दूधकी हांडी दो चार मिहट अरोगा
इके घरके ग्वाल कू दे हेनी पेर दूसरी बीडी आधा अरोगा
वनी त. एक गिलोली अरोगावनी पेर गिरराजकी कंदरामें
पीतांबर विछां वनां झालर चंद गिर राजकी पूजा समे वजे
शंख नहीं वजे जब गिर राजकी आरती होइ तव सर्व वजे
पेर हंडवत करके गिरराजजीकू पधराइके तिलक करनां
अक्षत लगावने तुलसी समर्पनी पेर सवमें तुलसी समर्पनी
जले दूध दही चंदन कंकू हलदी सवमें मिलावनी पेर यथा-
मसं स्नान करावनां माला धरावनां तुलसी समर्पनी पेर त-

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

2021 मे 2022 के आषाढ मास की शुद्ध 11 तिथि

हसी गिरराजके ऊपर सब टिकाने थोरी थोरी समर्पना फेर
 धूप शेष करने और गिरराजको कुडकरो भोग धरना तब एक
 मडगी के न्यारी श्रीगुरुनाथजीको हारी भजे धरनी फेर रखोदक
 करने फेर थोरीसी देव रहे भोग सखने श्रीगिरराजके भागे
 आचमन कराने फेर मुख वरक कराने फेर स्नान सोलने फेर
 र गालनक बुलायके थोरो बांधवेकू देने तिलक करके थापा
 देने पीछे गिरराजजीकू राध्द शीतल जलसु न्हावने चंदन
 नही समर्पना फेर न्हाइके अंगवस्त्र करके श्रीगुरुजीके
 पास धरावने फेर मुखियाजी माला बीजा श्रीगिरराजको प्रसादी
 उपरना सिंगारीको उठाने फेर सिंगारी सेककटहलुवानकू संग
 लेके श्रीगिरराजकी परभ्रमा चार 8 करे फेर हाथ धोइके
 श्रीगुरुजीको पधरावने आधी बीडी रही होइसो अरोगते
 पधारे फेर भीतर विवारीमें पधारके कंकवे अष्टदुकी चुनके
 दीवादी आरती वा समे करनी फेर मुखिया 8 वारने फेर श्रीगुरु
 रजीकू मंदिरमें पधरावने अन्न कुटको जहां भोग आवे तहां
 पधरावने फेर शीतल भोग धरना एक मुखिया तहां रह्यो आवे
 छीयो भयो ओर सब न्हाइकेको चहे जाइ फेर न्हायके अन्न
 सखडी सखडी अन्न कुटको भोग सब साजके फेर यथाक्रमसु
 शक सेवा सेन ताईकी पंचनी सब दीकटक करके अनेसरे
 कराइके बाहिर निकसनो या प्रमाणे पुरानी पुस्तक देखके
 करने ओर श्री गिरराजजीकी पूजा भये पीछे गिरराजजीकू
 स्वच्छ जलसु न्हावने फेर अंगवस्त्र कर श्रीगुरुजीके पास
 पधरावने पीतावर ओढवना तिलक करने छी माल श्रीजीकी
 बसेबरकी धरनी

शुद्ध 11 तिथि 2022
 2021 मे 2022 के आषाढ मास की शुद्ध 11 तिथि

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 1

कार्तिक वदी ३० को अन्नकूट होय और भाई दोज दोज की होय तो बीचके खाली दिनमें या प्रमाण शृङ्गार होय कार्तिक सुदी १ के दिन गुलाबीजरीके वस्त्र, पन्नाके आभरण, मोल चौरा, चन्द्रिका फुराखी सादा, शृङ्गार हल्के कर्णफूल २ ठांडेस्वरूपके घेरदार बागो ।

चैत्रवदी १ को डोल होय और फागुन सुदी १४ की होली होय तो पूर्णिमाके दिन नीचे प्रमाण शृङ्गार होय, चीकने नैनमुखके वस्त्र, बालकी खिड़कीकी पाग, आभरण मीना तथा सोनेके, बाँधोघेरदार, शृङ्गार हल्के, श्रीअङ्गमें कण्ठाभरण, नीचे एक चौकी, तथा माला छोटी, तथा गादी ऊपर हार १ तथा माला चार और गुंजामाला, कपोल ऊपर गुलाबके दोनों ओर टपका करने दाहिनी नहीं राखनी ।

श्रावणवदी २ के दिन हिजोला विराजे तो अन्नकूट श्रावणवदी १ के दिन या प्रमाण शृङ्गार होय,

धैतवस्त्र, मलमलके तथा बालकी खिड़कीकी पाग, सुफेद चन्द्रिका शृङ्गार उष्णकालके हल्के, ठांडेस्वरूप छेली परदनी धरे १ के दिन हिजोरा विराजे तो यह शृङ्गार आषाढ सुदी १४ के दिन करने ॥

श्री गिरिधरजीने कुंडुम
Sansthan
श्रीमद् गोकुलनाथजी महाराज
कुंडुम-॥ या पा ल ग स व र
पथम कुंडुम, पथरी कुंडुम, पथरी कुंडुम, छिस्सी
ने कुंडुम न या पा ल ग स व र अनेते माहा ल वा माहा
माहा पा ल ग स व र

आष्टमी वत् धरें कमल पत्र होय चौथे धरें अंजन नहीं वेणु वेत्रचौ
पड जडाऊ नील कमल सोनेके धरें मोतीको कमल धरे चुसनी नहीं
धरें ॥

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 1

॥ कार्तिक सुद १ ॥

www.yallabhacharya-agrahara.org

www.yallabhacharyakrupa.org

(Pushpanagarya Research Portal)

अमावास को अन्नकूट होइ तो नौमीसू शृंगार होइ नौमीकू दसमी-
को शृंगार दसमीको गोपालकल्लुभ एकादशीकू द्वादशीको शृंगार
द्वादशीको गोपालकल्लुभ द्वादशीकू धनतेरसको शृंगार गोपालकल्लुभ
बुदीके लडुवाको हांडी मलडा सजावकी खीर मीठे शाक आधो पा-
हिया छडिबलदार पकौडीकी कटो पापड तिरकडी देवरी मिरच
फल फेनी नहीं आरोगे

धनतेरसकू रूपचौदसको शृंगार होइ अरोगेको प्रकार रूपचौ-
दसवत् पहले लिखे हे ता प्रकार आरोगे गोपालकल्लुभमे फेनीआ-
रोगे पूवा नहीं अभ्यंग नहीं रूपचौदस तथा दिवाली भेली होइ तो
शृंगार दिवारीको अभ्यंग भेलो होइ अरोगे रूपचौदसवत् गोपाल-
कल्लुभमे आर पूवाकी क्येरी घृत वृषाकी दिवारीकू गोपालकल्लुभ
दीवलाको आरोगे आगे पूवाकी आर पीठे दीवलाको आर रूपचौदस
दिवारी न्यारे होय तो दोठे दिन ताई अभ्यंग उवटना सहित होइ
श्रीगुरुजीकू श्रीमहाप्रभुजीकू भी होइ

Shri Gauri Maharaj Ki Pustak

दिवारीके दिन सांझकू ग्वाल नहीं होइ शृंगार बजे नहीं होय श-
यन आरती होय चोखेलमें श्रीगुरुजी विराजे केन पास धरें
गाय खिलायके पीतांबर ओढनीके ऊपर वाम ओर दोहरो करके
धरें छोटें गुरुजी पास विराजे कसकी वंछी खीसीमें बीडी ४
परचारग गुसाईके पास रहे तेरा गुसाईनकू भीतरीयानकू
वांटें कीर्तनीया समाजसहित आगे चले आवीर गुलालकीचालनी
आगेकू मडती जांघ संग चले श्रीजमुनाजलकी त्रिष्टीज-
लको लेख डगगीर पंखा मुवा बीडी आरोगेके पधारि एक बीडी
अरोगे चुके हांडी आरोगे गाय खिलायके बीडी आरोगे चुके चो-
खेलसुं उतरके नौचो कियामे विराजे दर्शन होइ बीडी २ आरोगे
चुनके दीवलाकी कंकूके अष्टदलकी आरती कर परित्रमा करे श्री-
गुरुजी मंदिरमें पधारें ५ हांडी आरोगेके दसमी बीडी आरोगे

Sansthan
Shrimad Gokulnath Maharaj
Mota Mandir